IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भील समाज में परिवार और रिश्ते का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

(A Sociological Study of Family and Relationships in Bhil Society)

Author – **Dr. Beauty Meena, Assistant Professor Sociology, Government College, Gangapur, Bhilwara, Rajasthan.**

Abstract : यह शोध प्रबंध भील समाज में परिवार और रिश्तों की समाजशास्त्रीय संरचना का अध्ययन करता है। भील समाज राजस्थान का एक प्रमुख जनजातीय समुदाय है, जिसकी पारिवारिक संरचना, रिश्तों की भूमिका और सामाजिक ताने–बाने में एक विशिष्ट पहचान है। यह अध्ययन परिवार की परंपरागत एवं आधुनिक संरचना, विवाह व्यवस्था, पारिवारिक भूमिकाओं, सामाजिक मूल्यों तथा उनके आपसी संबंधों का विश्लेषण करता है। शोध में गुणात्मक व मात्रात्मक दोनों प्रकार की पद्धतियों का उपयोग किया गया है, जिसमें साक्षात्कार, सर्वेक्षण और प्रेक्षण शामिल हैं। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि वैश्वीकरण, शहरीकरण एवं आधुनिक शिक्षा के प्रभाव से भील समाज की पारंपरिक पारिवारिक संरचना में परिवर्तन आ रहा है। संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर प्रवृत्ति बढ़ रही है, वहीं विवाह और रिश्तों में भी नए बदलाव देखने को मिल रहे हैं। इसके अतिरिक्त, यह शोध दर्शाता है कि सामाजिक–सांस्कृतिक बदलावों के बावजूद भील समाज के लोग अपने पारंपरिक मूल्यों और रीति–रिवाजों को बनाए रखने का प्रयास कर रहे हैं। परिवार एवं रिश्तों की यह गतिशीलता, उनके सामाजिक ताने–बाने को किस प्रकार प्रभावित कर रही है, यही इस अध्ययन का प्रमुख विषय है।

Keywords : भील समाज, परिवार, रिश्ते, समाजशास्त्रीय अध्ययन, पारिवारिक संरचना, सामाजिक परिवर्तन, विवाह व्यवस्था, संयुक्त परिवार, एकल परिवार, पारंपरिक मूल्य, आधुनिकता, वैश्वीकरण, शहरीकरण, शिक्षा, सांस्कृतिक परिवर्तन, लैंगिक भूमिकाएँ, सामाजिक ताना–बाना, सामुदायिक सहयोग, पीढ़ीगत बदलाव, आर्थिक प्रभाव।

Article : भील समाज को प्राचीन और सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत ही समृद्ध माना जाता है। यह समाज अपनी विविधताओं, पारंपरिक मूल्यों और सामाजिक संरचनाओं के लिए प्रसिद्ध है। इस समाज में परिवार और रिश्तों की संरचना परंपरागत रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जो सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को गहरे रूप से प्रभावित करती है। भील समाज में परिवार, रिश्तों और सामाजिक संरचना की जटिलताएँ समाज के जीवन के अनेक पहलुओं को आकार देती हैं, विशेष रूप से विवाह, परिवार की भूमिका, और समुदाय में आपसी संबंधों में। इस अध्ययन का उद्देश्य भील समाज में परिवार और रिश्तों की संरचना, उनके बदलते पहलुओं और समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से उस पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करना है। परिवार, जो किसी भी समाज का आधार होता है, भील समाज में सामाजिक जीवन की नींव के रूप में कार्य करता है। यहाँ के परिवार की संरचना में पारंपरिक संयुक्त परिवार प्रणाली का गहरा प्रभाव देखा जाता है, जहाँ सभी सदस्य एक साथ रहते हैं और पारिवारिक जिम्मेदारियों को सामूहिक रूप से

निभाते हैं। हालाँकि, वैश्वीकरण और शहरीकरण के प्रभाव के चलते भील समाज में भी कुछ बदलाव आ रहे हैं। विशेष रूप से, शिक्षा, नौकरी, और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के चलते युवा पीढ़ी पारंपरिक परिवार संरचनाओं को चुनौती देती हुई एकल परिवार की ओर बढ़ रही है। ऐसे परिवर्तनों के बावजूद, भील समाज के पारंपरिक मूल्य, जैसे सामूहिकता, परिवार के प्रति सम्मान, और बुजुर्गों का आदर, अभी भी सामाजिक जीवन के अहम हिस्से बने हुए हैं। इस अध्ययन में, भील समाज के पारिवारिक जीवन, रिश्तों की गहनता, और उनके समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण पर विचार किया जाएगा। यह शोध इस बात पर भी प्रकाश डालेगा कि समाज में हो रहे परिवर्तनों के बावजूद, भील समाज किस तरह अपने पारंपरिक मूल्यों को बनाए रखते हुए आधुनिकता को आत्मसात कर रहा है।

परिवार – भील समाज में परिवार एक महत्वपूर्ण इकाई है। यहां सामान्यतः संयुक्त परिवार प्रणाली प्रचलित है, जिसमें कई पीढ़ियों के सदस्य एक साथ रहते हैं। परिवार के मुखिया का निर्णय अंतिम माना जाता है और सभी सदस्य उसका पालन करते हैं। परिवार के सदस्यों के बीच घनिष्ठ संबंध होते हैं और वे एक दूसरे के सुख–दुख में साथ देते हैं। भील समाज में परिवार को समाज के मूलभूत और संरचनात्मक तत्व के रूप में देखा जाता है। पारंपरिक भील परिवार में संयुक्त परिवार की व्यवस्था प्रमुख रूप से अस्तित्व में रही है, जहाँ एक ही घर में पिता, मां, दादा–दादी, चाचा–चाची, भाई–बहन और अन्य परिजन मिलकर रहते हैं। इस व्यवस्था में परिवार के सभी सदस्य अपने–अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को साझा करते हैं, जिससे आपसी सहयोग, सामूहिकता और रिश्तों की घनिष्ठता बनाए रखने में मदद मिलती है। संयुक्त परिवार प्रणाली में बुजुर्गों को विशेष सम्मान और स्थान प्राप्त होता है। उनका मार्गदर्शन न केवल पारिवारिक मामलों में, बल्कि समाज में सही आचरण और आस्थाओं को सुदृढ़ करने के लिए भी महत्वपूर्ण होता है। परिवार के सभी सदस्य एक दूसरे की मदद करते हैं, चाहे वह आर्थिक सहायता हो या भावनात्मक सहयोग। इस संरचना में, महिलाओं की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि वे पारिवारिक व्यवस्था और जीवनशैली को बनाए रखने के लिए जिम्मेदार होती हैं। परिवार के भीतर, पिता या परिवार के प्रमुख सदस्य की भूमिका पारिवारिक निर्णय लेने में होती है, जबकि महिलाएँ घरेलू कार्यों के संचालन और बच्चों की परवरिश में मुख्य रूप से संलग्न रहती हैं। इसके अलावा, बच्चों को भी परिवार के सदस्यों द्वारा संस्कार दिए जाते हैं, जिससे वे समाज में अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को समझ सकें।

परिवार की संरचना में बदलाव – भील समाज में पारंपरिक संयुक्त परिवार व्यवस्था काफी महत्वपूर्ण रही है, लेकिन समाज में हो रहे सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों ने इस व्यवस्था में भी बदलाव लाया है। शिक्षा और रोजगार के अवसरों के कारण युवा पीढ़ी अपने पारंपरिक परिवारों से बाहर जाकर एकल परिवारों की ओर बढ़ रही है। एकल परिवारों में आमतौर पर माता–पिता और उनके बच्चों के बीच संबंधों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, और परिवार की संरचना अपेक्षाकृत सरल होती है। शहरीकरण और वैश्वीकरण के प्रभाव ने भी भील समाज के पारिवारिक जीवन को प्रभावित किया है। जहाँ एक ओर संयुक्त परिवार प्रणाली में कुछ हद तक ढील आई है, वहीं दूसरी ओर एकल परिवारों में बच्चों को अधिक स्वतंत्रता और स्वायत्तता मिल रही है। इन परिवर्तनों के बावजूद, परिवार के भीतर आपसी प्रेम, सहयोग और सम्मान की भावना अब भी मजबूत है, जो भील समाज की विशेष पहचान है। इस प्रकार, भील समाज में परिवार न केवल एक सामाजिक और सांस्कृतिक इकाई के रूप में कार्य करता है, बल्कि यह समाज में व्यक्ति के अधिकारों, कर्तव्यों और सामाजिक संबंधों को साकार करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी है। पारंपरिक संरचना के बावजूद, समय के साथ परिवार की भूमिका और संरचना में बदलाव देखा जा रहा है, जो समाज के विकास और आधुनिकता के साथ सामंजस्य स्थापित कर रहा है।

रिश्ते – भील समाज में रिश्तों का एक जटिल जाल होता है। यहां विभिन्न प्रकार के रिश्तों को विशेष महत्व दिया जाता है। कुछ महत्वपूर्ण रिश्ते इस प्रकार हैं:

भील समाज में रिश्तों की एक गहरी सांस्कृतिक और सामाजिक जड़ है। समाज में पारिवारिक और सामुदायिक रिश्तों को अत्यधिक महत्व दिया जाता है, और यह रिश्ते समाज के ताने–बाने को मजबूत

बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पारिवारिक और सामूहिक संबंधों की परंपराएँ भील समाज की विशेष पहचान हैं, और इन रिश्तों को कड़ी सामाजिक और सांस्कृतिक परंपराओं द्वारा संरक्षित किया जाता है।

परिवारिक रिश्ते – भील समाज में, परिवार के भीतर रिश्तों की जटिलता और गहराई बहुत महत्वपूर्ण होती है। पारिवारिक रिश्ते, जैसे माता–पिता और बच्चों के बीच, भाई–बहन के रिश्ते, और दादी–दादा से लेकर पोते–पोतियों तक, एक मजबूत भावनात्मक और सांस्कृतिक आधार पर बने होते हैं। माता–पिता का बच्चों के प्रति प्यार और जिम्मेदारी एक अहम पहलू है, वहीं भाई–बहनों के रिश्ते में भी सहयोग, सामूहिकता और एक दूसरे के लिए समर्थन की भावना रहती है। दादी–दादा या चाचा–चाची के साथ बच्चों के रिश्ते को भी विशेष महत्व दिया जाता है। बुजुर्गों का मार्गदर्शन और उनके अनुभवों का सम्मान करना भील समाज के एक महत्वपूर्ण मूल्य के रूप में देखा जाता है। पारंपरिक समाज में, रिश्तों की यह संरचना न केवल व्यक्तिगत जीवन को आकार देती है, बल्कि यह समाज के समग्र विकास को भी प्रभावित करती है।

सामाजिक रिश्ते – भील समाज में पारिवारिक रिश्तों के अलावा, सामुदायिक रिश्तों का भी विशेष स्थान है। समाज में रिश्ते केवल परिवार तक सीमित नहीं रहते, बल्कि बड़े सामाजिक नेटवर्क और समुदाय के भीतर भी रिश्तों की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विवाह, जन्म, मरे हुए व्यक्ति की अंतिम संस्कार जैसी सामाजिक गतिविधियों में सामूहिक सहयोग और साझेदारी एक अनिवार्य हिस्सा होती है। सामुदायिक रिश्तों में सदस्य एक दूसरे के प्रति दायित्व महसूस करते हैं और एक दूसरे की मदद करना एक सामान्य प्रथा है। विवाह या अन्य पारिवारिक घटनाओं के दौरान समुदाय के सदस्य आपसी मेल–जोल बढ़ाते हैं और एक दूसरे के साथ संबंधों को मजबूत करते हैं। इस सामाजिक ताने–बाने में, जातीयता, संस्कृति और परंपराओं का गहरा प्रभाव देखा जाता है, जो रिश्तों को स्थायित्व और सुरक्षा प्रदान करते हैं।

विवाह और रिश्तों में बदलाव – हालांकि भील समाज में पारंपरिक विवाह व्यवस्था का अत्यधिक सम्मान किया जाता है, लेकिन समय के साथ इसमें कुछ बदलाव भी आए हैं। पहले जहां विवाहों को पारिवारिक और जातीय रिश्तों के आधार पर तय किया जाता था, वहीं अब प्रेम विवाह, अंतर्जातीय विवाह और व्यक्तिगत पसंद की भूमिका भी बढ़ी है। इन परिवर्तनों के बावजूद, विवाह को एक महत्वपूर्ण सामाजिक और सांस्कृतिक संस्था के रूप में देखा जाता है, और विवाह के बाद परिवारों के बीच रिश्ते मजबूत होते हैं, जो आगे चलकर समाज में सामूहिकता और सहयोग की भावना को बढ़ावा देते हैं। इसके अलावा, महिलाओं और पुरुषों के रिश्तों में भी सामाजिक बदलावों का असर पड़ा है। महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार और उन्हें शिक्षा के अधिक अवसर मिलने से उनके पारिवारिक और सामुदायिक रिश्ते अब अधिक समानतावादी और सहयोगी होते जा रहे हैं। हालांकि, पारंपरिक लैंगिक भूमिकाएँ अब भी कुछ हद तक अस्तित्व में हैं, लेकिन महिलाएँ अब परिवार और समाज के फैसलों में अधिक सक्रिय भूमिका निभाती हैं।

रिश्तों में सांस्कृतिक और पारंपरिक मूल्य – रिश्तों के भीतर सांस्कृतिक और पारंपरिक मूल्यों का गहरा प्रभाव रहता है। भील समाज में रिश्तों का आधार एक दूसरे के प्रति सम्मान, विश्वास, और समर्पण पर है। सामूहिकता और एकता को बढ़ावा देने वाले ये मूल्य समाज को मजबूत करते हैं और समाज के हर सदस्य को यह महसूस कराते हैं कि वे एक बड़े परिवार का हिस्सा हैं। इस प्रकार, भील समाज में रिश्ते केवल व्यक्तिगत स्तर पर नहीं, बल्कि सामूहिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण हैं। इस प्रकार, भील समाज में रिश्ते परिवार, समुदाय और समाज के ताने–बाने को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन रिश्तों की विशेषता यह है कि वे केवल भावनात्मक आधार पर नहीं, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारियों और सांस्कृतिक मूल्यों पर भी आधारित होते हैं, जो समाज में सामूहिकता और आपसी सहयोग की भावना को बनाए रखते हैं।

सामाजिक अध्ययन – भील समाज में परिवार और रिश्तों का समाजशास्त्रीय अध्ययन करने के लिए कई तरीकों का उपयोग किया जा सकता है। कुछ महत्वपूर्ण तरीके इस प्रकार हैं:
भील समाज राजस्थान के एक प्रमुख जनजातीय समुदाय का हिस्सा है, जो अपनी सांस्कृतिक धरोहर और परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है। भील समाज में परिवार और रिश्तों का सामाजिक अध्ययन समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह समाज के सामाजिक ताने–बाने, मूल्य, आदतों और पारंपरिक संरचनाओं को समझने में मदद करता है। इस अध्ययन में परिवार, रिश्तों और समाज के भीतर के अन्य सामाजिक कारकों को गहराई से समझने का प्रयास किया गया है, जो इस समाज के भीतर जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करते हैं।

सामाजिक संरचना और वर्ग व्यवस्था – भील समाज की सामाजिक संरचना बहुत ही जटिल और विविधतापूर्ण है। पारंपरिक रूप से यह समाज कबीलाई और जातीय रूप से संगठित है, जिसमें परिवार और समुदाय की अहम भूमिका होती है। परिवारों में सभी सदस्य एक–दूसरे के साथ मिलकर रहते हैं, और सामूहिक जिम्मेदारियाँ निभाते हैं। यह समाज आमतौर पर संयुक्त परिवार की संरचना में बसा हुआ है, जहाँ परिवार के बुजुर्गों का बहुत सम्मान होता है और उनकी राय को सर्वोपरि माना जाता है। समाज के भीतर विभिन्न वर्गों और जातियों के बीच भेदभाव भी देखने को मिलता है, हालांकि यह भेदभाव समय के साथ कुछ हद तक कम हुआ है। सामाजिक व्यवस्था में यह भेदभाव, पारंपरिक मान्यताओं, रीति–रिवाजों और जातीय आधार पर आधारित होता था, परंतु आधुनिक शिक्षा और सामाजिक जागरूकता के कारण अब इस भेदभाव में कुछ सुधार देखा जा रहा है।

सामाजिक संबंध और सामूहिकता – भील समाज में सामाजिक संबंधों और सामूहिकता का विशेष महत्व है। पारिवारिक रिश्तों के अलावा, सामूहिक सहयोग और समाज में आपसी मदद की भावना भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। गाँव और समुदायों में लोग आपस में जुड़े होते हैं और किसी भी सामाजिक घटना–चाहे वह विवाह हो, त्योहार हो या दुख–भाग्य का कोई अवसरकृसभी सदस्य मिलकर उसका हिस्सा बनते हैं। इस प्रकार, समाज में सामूहिकता का यह तत्व हर पहलू में समाहित होता है, और यह समाज के सदस्यों को आपसी सहयोग और एकता की भावना से जोड़ता है। इसके अतिरिक्त, समुदाय के भीतर रिश्तों में पारस्परिक सम्मान और सहयोग की भावना रहती है, जिससे सामाजिक ताने–बाने को मजबूती मिलती है। यह एकता समाज के सामाजिक ढांचे को स्थिर बनाए रखती है और विभिन्न सामाजिक और पारिवारिक मुद्दों के समाधान में मदद करती है।

सामाजिक बदलाव और आधुनिकता – भील समाज, जैसे कि अन्य जनजातीय समाजों में होता है, समय के साथ समाज में बदलावों का सामना कर रहा है। शिक्षा, शहरीकरण और वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण, भील समाज की पारंपरिक सामाजिक संरचना में कुछ परिवर्तन आए हैं। विशेष रूप से युवा पीढ़ी ने शहरी क्षेत्रों में अधिक शिक्षा प्राप्त की है, जो उनके जीवन दृष्टिकोण और सामाजिक मान्यताओं में बदलाव ला रहे हैं। आजकल, भील समाज के लोग आधुनिक शिक्षा, नौकरी, और आर्थिक स्वतंत्रता की ओर बढ़ रहे हैं, जिससे पारंपरिक संरचनाओं में बदलाव आ रहा है। उदाहरण स्वरूप, संयुक्त परिवार प्रणाली की बजाय एकल परिवार की अवधारणा बढ़ रही है, और पारंपरिक रूप से तयशुदा विवाहों की बजाय प्रेम विवाह और अंतर्जातीय विवाह की स्वीकृति बढ़ी है। इन बदलावों के बावजूद, भील समाज ने अपने सांस्कृतिक और पारंपरिक मूल्यों को बनाए रखा है, और यह बदलाव धीरे–धीरे समाज के भीतर समायोजित हो रहे हैं।

समाज में महिलाओं की भूमिका – भील समाज में महिलाओं की भूमिका भी समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से एक महत्वपूर्ण पहलू है। पारंपरिक रूप से, महिलाएँ घरेलू कार्यों और बच्चों की परवरिश के लिए जिम्मेदार रही हैं। हालांकि, शिक्षा के क्षेत्र में सुधार और आर्थिक स्वतंत्रता के कारण महिलाएँ अब परिवार और समाज के निर्णयों में सक्रिय भागीदार बन रही हैं। उनके सामाजिक अधिकारों और कर्तव्यों में भी परिवर्तन आया है, और वे अब समाज के विकास में योगदान देने के लिए अधिक सक्षम हैं। इसके बावजूद,

कुछ पारंपरिक विचारधाराएँ अब भी समाज में प्रभावी हैं, जहाँ महिलाओं के लिए कुछ सामाजिक सीमाएँ निर्धारित की जाती हैं, जैसे कि उनकी स्वतंत्रता पर नियंत्रण और विवाह की पारंपरिक प्रणाली में कुछ बदलाव। लेकिन महिलाओं के अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूकता बढ़ने से समाज में उनकी स्थिति में सुधार हुआ है। भील समाज में सामाजिक बदलावों और पारंपरिक संरचनाओं के बीच एक दिलचस्प संतुलन देखा जा रहा है। परिवार और रिश्तों की संरचना, समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करती है और इन परंपराओं का समाज पर गहरा असर होता है। भील समाज धीरे–धीरे आधुनिकता की ओर बढ़ रहा है, लेकिन उसने अपनी सांस्कृतिक जड़ों और पारंपरिक मूल्यों को बनाए रखा है। सामाजिक परिवर्तन और पारंपरिक विश्वासों के बीच यह संतुलन समाज के भीतर सामूहिकता, सहयोग और सम्मान की भावना को बनाए रखने में मदद करता है।

निष्कर्ष : इस अध्ययन के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि भील समाज में परिवार और रिश्तों की संरचना परंपरा और आधुनिकता के संयोग से प्रभावित हो रही है। ऐतिहासिक रूप से, भील समाज में संयुक्त परिवार की प्रथा प्रमुख रही है, जहाँ पारिवारिक सदस्यों के बीच घनिष्ठ संबंध, सामूहिक उत्तरदायित्व और पारंपरिक रीति–रिवाजों का पालन किया जाता था। हालांकि, वैश्वीकरण, शहरीकरण, और शिक्षा के बढ़ते प्रभाव के कारण अब परिवारों में संरचनात्मक बदलाव देखे जा रहे हैं। अध्ययन से पता चला कि एकल परिवारों की संख्या बढ़ रही है, विशेष रूप से युवा पीढ़ी के नौकरी, शिक्षा और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की ओर बढ़ते रुझान के कारण। विवाह व्यवस्था में भी बदलाव आया है–जहाँ पहले पारंपरिक रूप से तयशुदा विवाहों का प्रचलन था, वहीं अब प्रेम विवाह और अंतर्जातीय विवाह की स्वीकृति बढ़ रही है, हालांकि यह अभी भी सीमित है। रिश्तों की दृष्टि से, पारंपरिक मूल्यों की पकड़ अभी भी मजबूत है। बुजुर्गों का सम्मान, सामुदायिक सहयोग, और पारिवारिक उत्तरदायित्व अभी भी समाज की मूलभूत विशेषताएँ बनी हुई हैं।

References :

1. गुप्ता, डी. (2005)। जाति, वर्ग और शक्तिः राजस्थान के एक गाँव में सामाजिक स्तरीकरण के बदलते रूप। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. जैन, पी. (2000)। राजस्थान में सामाजिक परिवर्तनः आदिवासी समुदायों का अध्ययन। रावत पब्लिकेशन्स।
3. सिंह, के. (2012)। आदिवासी भारतः एक अवलोकन। न्यू एज़ इंटरनेशनल पब्लिशर्स।
4. शर्मा, के. (2017)। भारत में ग्रामीण समाजः एक गाँव में परिवार, विवाह और संबद्धता का अध्ययन। सैज पब्लिकेशन्स।
5. पुरी, एच. (2011)। भारतीय समाजः संस्थाएँ और परिवर्तन। पियर्सन एजुकेशन।